

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّنْظِ . الْحَمْدُ لِلَّهِ الْحَمْدُ . الْحَمْدُ

કિતાબ પઢને કી દુઆ

અજ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી, હઝરત અલ્લામા
મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ૨-ઝવી દામ્ત બરકાતુલ્લમ્માલિયે
દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે ઝૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ
લીજિયે اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ જો કુછ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હૈ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا دَاالْجَبَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા : એ અલ્લાહ ઈબ્રાહીમ પર ઈલ્મ વ હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઓર હમ પર અપની
રહમત નાઝિલ ફરમા ! એ અ-ઝમત ઓર બુઝુર્ગી વાલે ! (المستطرف ج ۱ ص ۱۰۴ دارالفکر بیروت)

નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરુદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના

વ બકીઅ

વ મગ્ફિરત

13 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 1428 હિ.



“ અબ્લક ઘોડે સુવાર ”

યેહ રિસાલા (અબ્લક ઘોડે સુવાર)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત અલ્લામા
મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ૨-ઝવી ઝિયાઈ દામ્ત બરકાતુલ્લમ્માલિયે
ને ઉર્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ
ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઓર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા
હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ
મકતૂબ યા ઈ-મેઈલ) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના

સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને, તીન દરવાઝા,

અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત, ઈન્ડિયા

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अप्लक घोडे सुवार

शैतान लाप सुस्ती दिलाये येह रिसाला (48 सङ्खत)
आभिर तक पठ लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ कुरबानी के
मु-तअल्लिक काई मा'लूमात मिलेंगी.

दुइद शरीफ़ की इर्जीलत

सरकारे मदीना, राहते कल्लो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना
बेशक बरोजे कियामत उस की दइशतों और हिसाब किताब से जल्ल
नजात पाने वाला शप्स वोह होग़ा जिस ने तुम में से मुज पर दुन्या के
अन्दर भ कसरत दुइद शरीफ़ पढे होंगे."

(ألفردوس بماثور الخطّاب ج ٥ ص ٢٧٧ حديث ٨١٧٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अप्लक घोडे सुवार

उज्जरते सय्यिदुना अहमद बिन ईसहाक इस्हाक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا कुरमाते
हैं : मेरा भाई बा वुजूदे गुरबत रिजाये ईलाही की निय्यत से हर
साल भ-करह ईद में कुरबानी किया करता था. उस के ईन्तिकाल

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुई पाक पढा अल्लाह उस पर दस रज्मतें भेजता है. (स्)

के बा'द मैं ने अेक प्वाब देभा के कियामत बरपा हो गई है और लोग अपनी अपनी कध्रों से निकल आये हैं, यकायक मेरा मईूम भाई अेक अब्लक (या'नी दो रंगे यितकुध्र) घोडे पर सुवार नजर आया, उस के साथ और भी बहुत सारे घोडे थे. मैं ने पूछा ? يَا أَخِي مَا فَعَلَ اللَّهُ تَعَالَى بِكَ ! अल्लाह तआला ने आप के साथ क्या मुआ-मला इरमाया ? कलने लगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे बप्श दिया. पूछा : किस अमल के सबाब ? कहा : अेक दिन किसी गरीब बुढिया को ब निय्यते सवाब मैं ने अेक दिरहम दिया था वोही काम आ गया. पूछा : येह घोडे कैसे हैं ? बोला : येह सबा मेरी ब-करह ईद की कुरबानियां हैं और जिस पर मैं सुवार हूं येह मेरी सबा से पहली कुरबानी है. मैं ने पूछा : अब कहां का अज़्म है ? कहा जन्नत का. येह कल कर मेरी नजर से ओजल हो गया. (رُزَّةُ النَّاصِحِينَ ص २१०) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रज्मत हो और उन के सहके उमारी बे हिसाब मग़िरत हो.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

“अल्लाह” के यार दुरुई की निरबत
से यार इराभीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

﴿1﴾ कुरबानी करने वाले को कुरबानी के जानवर के हर बाल

के बढले में अेक नेकी मिलती है (ترمذی ج ३ ص १२१ حدیث १६९८)

﴿2﴾ जिस ने जुश दिली से तालिबे सवाब हो कर कुरबानी की, तो वोह

करमाने मुस्तक! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुइडे पाक पठना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (परान)

आ-तशे जहन्नम से हिजाब (या'नी रोक) हो जायेगी (२१२१ हदीथ १६ व ३ ह ३) ﴿3﴾ औ इतिमा ! अपनी कुरबानी के पास मौजूद रहो क्यूंके इस के पून का पहला कतरा गिरेगा तुम्हारे सारे गुनाह मुआफ़ कर दिये जायेंगे (११११ हदीथ ६११ व १ ह १) ﴿4﴾ जिस शप्स में कुरबानी करने की वुरसत हो फिर भी वोह कुरबानी न करे तो वोह हमारी ईदगाह के करीब न आये. (३१२३ हदीथ ०१९ व २ ह ३)

क्या कर्ज ले कर भी कुरबानी करनी होगी ?

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! जो लोग कुरबानी की इस्तिताअत (या'नी ताकत) रखने के बा वुजूद अपनी वाजिब कुरबानी अदा नहीं करते, उन के लिये लम्हअे झिक्किया है, अव्वल येही ખસारा (या'नी नुकसान) क्या कम था के कुरबानी न करने से ईतने बडे सवाब से महरूम हो गये मजीद येह के वोह गुनाहगार और जहन्नम के हकदार भी हैं. इतावा अम्हदिय्या जिहद 3 सफ़हा 315 पर है : “अगर किसी पर कुरबानी वाजिब है और उस वक्त उस के पास रुपै नहीं हैं तो कर्ज ले कर या कोई चीज इरोप्त कर के कुरबानी करे.”

पुल मिरात की सुवारी

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि ईजने परवर दगार हो आलम के मालिको मुप्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने पुशबूदार है : ईन्सान ब-करह ईद के दिन कोई ऐसी नेकी नहीं करता जो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ को पून बहाने से जियादा प्यारी हो, येह

करमान मुस्तफ़ा صلى الله عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद पाक न पढा तदकीक वाह
बदभप्त हो गया. (उरु)

कुरबानी क्रियामत में अपने सींगों बालों और भुरों के साथ आयेगी और कुरबानी का भून जमीन पर गिरने से पहले अल्लाह के हां कबूल हो जाता है. लिहाजा भुश टिली से कुरबानी करो. (1498 حديث 122 ص 3) (ترويضه)
मुहकिंक अलल ईत्लाक, भातिमुल मुहदिसीन, हजरते अल्लामा शैभ अब्दुल उक मुहदिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي فرमाते हैं : कुरबानी, अपने करने वाले के नेकियों के पदले में रभी जायेगी जिस से नेकियों का पलडा त्तारी होगा. (اشعة اللّمعات ج 1 ص 104) हजरते सय्यिदुना अल्लामा अली कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَرِي فرमाते हैं : फिर उस के लिये सुवारी बनेगी जिस के जरीअे येह शप्स ब आसानी पुल सिरात से गुजरेगा और उस (जानवर) का हर उज़्व मालिक (या'नी कुरबानी पेश करने वाले) के हर उज़्व (के लिये जहन्नम से आजादी) का इंदिया बनेगा.

(1470 الحديث 574 ص 3) (مِرْآة الْمُفَاتِيحِ ج 2, स. 375)

कुरबानी करने वाले बाल नाभुन न काटे

मुइस्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत हजरते मुइती अहमद यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْحَنَّان ओक हदीसे पाक (जब अ-शरह आ जाये और तुम में से कोई कुरबानी करना चाहे तो अपने बाल व बाल को बिदकुल हाथ न लगाओ) के तहत्त फरमाते हैं : “या'नी जो अभीर वुजूबन या इकीर नइलन कुरबानी का ईरादा करे वोह जुल डिजजतिल हुराम का चांढ देभने से कुरबानी करने तक नाभुन बाल और (अपने बदन की) मुर्दरि बाल वगैरा न काटे न कटवाओ ताके हाजियों से कदरे (या'नी थोड़ी) मुशा-बहत हो जाये के वोह लोग अहराम में हजामत नहीं करा सकते

करमाने मुस्तहब। طلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुझ पर दस भरतभा सुबह और दस भरतभा शाम दुइदें पाक पढा
 उसे कियामत के दिन मेरी शक्राअत मिलेगी. (15/18)

और ताके कुरबानी हर बाल, नापुन (के लिये जहन्नम से आजादी) का
 फ़िदया बन जाये. येह हुकम **ईस्तिड्बाबी** है वुजूबी नहीं (या'नी
 वाजिब नहीं, मुस्तहब है और हत्तल ईम्कान मुस्तहब पर भी अमल
 करना याछिये अलबत्ता किसी ने बाल या नापुन काट लिये तो गुनाह भी
 नहीं और औसा करने से कुरबानी में फलल भी नहीं आता, कुरबानी
 दुरुस्त हो जाती है) लिहाजा कुरबानी वाले का हजामत न कराना बेहतर
 है लाज़िम नहीं. ईस से मा'लूम हुवा के अर्थों की मुशा-बहत (या'नी
 नकल) भी अर्थी है.”

गरीबों की कुरबानी

मुइती साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ مज़ीद फ़रमाते हैं : “बल्के जो
 कुरबानी न कर सके वोह भी ईस अ-शरह (या'नी जुल डिज्जतिल
 हराम के इब्तिदाई दस अय्याम) में हजामत न कराये, ब-करह ईद
 के दिन बा'दे नमाजे ईद हजामत कराये तो **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** (कुरबानी
 का) सवाब पायेगा.” (मिरआतुल मनाज्जल, जि. 2, स. 370)

मुस्तहब काम के लिये गुनाह की इज्जत नहीं

याद रहे ! यालीस दिन के अन्दर अन्दर नापुन तराशना,
 बगलों और नाइ के नीचे के बाल साइ करना ज़रूरी है 40 दिन से
 ज़ियादा तापीर गुनाह है युनान्चे मेरे आका आ'ला हज़रत इमामे
 अहले सुन्नत मुजदिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद
 रज़ा भान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : येह (या'नी जुल डिज्जत के
 इब्तिदाई दस दिन में नापुन वगैरा न काटने का) हुकम सिर्फ़
 ईस्तिड्बाबी है, करे तो बेहतर है न करे तो मुज़ा-यका नहीं, न ईस

करमाने मुस्तक : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुरद शरीक न पढा उस ने जका की. (मर्राज)

को हुकम उदूली (या'नी ना इरमानी) कल सकते हैं, न कुरबानी में नकस (या'नी षामी) आने की कोर्ष वजह, बल्के अगर किसी शप्स ने 31 दिन से किसी उज़र के सबभ प्वाह बिदा उज़र नापुन न तराशे हों के यांढ जिल डिज्जा का हो गया तो वोह अगर्ये कुरबानी का इरादा रभता हो ईस मुस्तहभ पर अमल नहीं कर सकता के अब दसवीं तक रभेगा तो नापुन तरश्वाअे हुअे ईक्तालीसवां दिन हो ज़अेगा और यालीस दिन से ज़ियादा न बनवाना गुनाह है. ई'ले मुस्तहभ के लिये गुनाह नहीं कर सकता.

(मुलप्भस अज इतावा २-अविय्या, जि. 20, स. 353, 354)

दुरबानी वाजिब होने के लिये कितना माल होना चाहिये

इर बालिग, मुकीम, मुसल्मान मर्द व औरत, मालिके निसाब पर कुरबानी वाजिब है. (عالمگیری ج १ ص १९९) मालिके निसाब होने से मुराद येह है के उस शप्स के पास साढे भावन तोले यांटी या उतनी मालिय्यत की रकम या उतनी मालिय्यत का तिज़रत का माल या उतनी मालिय्यत का हाजते अस्लिय्या के इलावा सामान हो और उस पर अल्दाह عَزَّوَجَلَّ या बन्दों का ईतना कर्जा न हो जिसे अदा कर के जिक्र कर्दा निसाब बाकी न रहे. हु-कलाअे किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام इरमाते हैं : हाजते अस्लिय्या (या'नी ज़रिय्याते जिन्दगी) से मुराद वोह थीजें हैं : जिन की उमूमन ईन्सान को ज़रत होती है और ईन के बिगैर गु-जरे अवकात में शदीद तंगी व दुश्वारी महसूस होती है जैसे रहने का घर, पहनने के कपडे, सुवारी, ईल्मे दीन से मु-तअद्लिक किताबें और पेशे से मु-तअद्लिक औजार

करमान मुस्तफा : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुज पर रोज जुमुआ दुरद शरीफ पढेगा मे कियामत क दिन उस की शकाअत करेगा. (अमल)

वगैरा. (الهداية ج ۱ ص ۹۶) अगर “हाजते अस्लिय्या” की ता’रीफ पेशे नजर रफी जाअे तो बभूबी मा’लूम होगे के “हमारे घरों में बे शुमार थीजें” ऐसी हैं के जो हाजते अस्लिय्या में दाखिल नहीं युनान्थे अगर एन की कीमत “साढे भावन तोला थांढी” के बराबर पछोंय गई तो कुरबानी वाजिब होगी.

अगर किसी शप्स के पास रिहाईशी मकान के एलावा मकान हो जो के किराअे पर हो या इस्ति’माली गाडियों के एलावा गाडियां हों जो किराअे पर हों और उन के किराअे पर ही उस शप्स की गुजर बसर हो, एन थीजों की आमदनी ही उस के अहलो एयाल के नईके (या’नी गुजारे) के लिये हो यूंही किराअती (या’नी भेतीबाडी की) जमीन हो या भेंस या दीगर जानवर हों और उन से हासिल होने वाली आमदनी ही से उस का और अहलो एयाल का नईका (या’नी ખર્च) पूरा होता हो तो एन थीजों की मालियत/कीमत अगर्थे निसाब से जईद हो इस की वजह से उस शप्स पर कुरबानी व स-द-कअे इत्र लाजिम नहीं होगे, अलबत्ता अगर उस जमीन या मकान या गाडी या दुकान या जानवर वगैरा से आमदनी न हो या आमदनी हो लेकिन गुजर बसर व नईकअे अहलो एयाल के लिये दीगर आमदनी हो तो ऐसी सूरत में एन थीजों की मालियत निसाब की मिक्दार होने पर कुरबानी व स-द-कअे इत्र वाजिब होगे.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तछारत है. (पृ.१)

वक्त के अन्दर शराईत पाये गये तो ही कुरबानी वाजिब होगी

माल और दीगर शराईत कुरबानी के अय्याम (या'नी 10 जुल डिज्जतिल हराम की सुब्हे सादिक से ले कर 12 जुल डिज्जतिल हराम के गुइबे आइताब तक) में पाये जाअें जल्मी कुरबानी वाजिब होगी. ईस का मस्अला बयान करते हुअे सदरुशशरीअह, भदरुतरीकह उजरते अद्लामा मौलाना मुइती अमजद अली आ'उमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكُوفَى “बछारे शरीअत” में इरमाते हैं : येह जइर नही के दसवीं ही को कुरबानी कर डाले, ईस के लिये गुन्जईश है के पूरे वक्त में जब याहे करे लिछाजा अगर ईब्तिदाअे वक्त में (10 जुल डिज्जत की सुब्ह) ईस का अइल न था वुजूब के शराईत नही पाये जाते थे और आभिर वक्त में (या'नी 12 जुल डिज्जत को गुइबे आइताब से पहले) अइल हो गया या'नी वुजूब के शराईत पाये गये तो उस पर वाजिब हो गई और अगर ईब्तिदाअे वक्त में वाजिब थी और अल्मी (कुरबानी) की नही और आभिर वक्त में शराईत जाते रहे तो (कुरबानी) वाजिब न रही.

(عالمگیری ج ۵ ص ۲۹۳)

**“कुरबानी वाजिब है” के भारह हुइइ की निस्मत
से कुरबानी के 12 म-दनी कूल**

❦ 1 ❧ भा'उ लोग पूरे घर की तरइ से सिई अेक बकरा कुरबान करते हैं

કરમાન મુસ્તફા صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुरेद पढो क तुम्हारा दुरेद मुज तक पछोयता है. (طبرانی)

હાલાંકે બા'ઝ અવકાત ઘર કે કઈ અફરાદ સાહિબે નિસાબ હોતે હેંં ઓર ઈસ બિના પર ઉન સારોં પર કુરબાની વાજિબ હોતી હૈ ઉન સબ કી તરફ સે અલગ અલગ કુરબાની કી જાએ. એક બકરા જો સબ કી તરફ સે ક્રિયા ગયા કિસી કા ભી વાજિબ અદા ન હુવા કે બકરે મેં એક સે ઝિયાદા હિસ્સે નહીં હો સકતે કિસી એક તૈ શુદા ફર્દ હી કી તરફ સે બકરા કુરબાન હો સકતા હૈ.

﴿2﴾ ગાય (બેંસ) ઓર ઊંટ મેં સાત કુરબાનિયાં હો સકતી હેંં.

(عالمگیری ج ۵ ص ۳۰۴)

﴿3﴾ ના બાલિગ કી તરફ સે અગર્યે વાજિબ નહીં મગર કર દેના બેહતર હૈ (ઓર ઈજાઝત ભી ઝરૂરી નહીં). બાલિગ ઓલાદ યા ઝોજા કી તરફ સે કુરબાની કરના યાહે તો ઉન સે ઈજાઝત તલબ કરે અગર ઉન સે ઈજાઝત લિયે બિગૈર કર દી તો ઉન કી તરફ સે વાજિબ અદા નહીં હોગા. (عالمگیری ج ۵ ص ۲۹۳, બહારે શરીઅત, જિ. ૩, સ. 428) ઈજાઝત દો તરહ સે હોતી હૈ : (1) સરા-હતન મ-સલન ઉન મેં સે કોઈ વાઝેહ તૌર પર કહ દે કે મેરી તરફ સે કુરબાની કર દો (2) દલા-લતન (UNDERSTOOD) મ-સલન યેહ અપની ઝોજા યા ઓલાદ કી તરફ સે કુરબાની કરતા હૈ ઓર ઉન્હેં ઈસ કા ઈલ્મ હૈ ઓર વોહ રાઝી હેંં. (ફતાવા અહલે સુન્નત ગૈર મત્બૂઆ)

﴿4﴾ કુરબાની કે વક્ત મેં કુરબાની કરના હી લાઝિમ હૈ કોઈ દૂસરી ચીઝ ઈસ કે કાઈમ મકામ નહીં હો સકતી મ-સલન બજાએ કુરબાની

करमाने मुस्तक! صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरइद शरीफ न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शाप्स है. (زينة)

के बकरा या उस की कीमत स-दका (भैरात) कर दी जाये येह नाकाफी है. (عالمگیری ج ۵ ص ۹۹۳, બહારે શરીઅત, જિ. ૩, સ. ૩૩૫)

﴿5﴾ **કુરબાની કે જાનવર કી ઉમ્મ :** “ઉંટ” પાંચ સાલ કા, ગાય દો સાલ કી, બકરા (ઇસ મેં બકરી, દુમ્બા, દુમ્બી ઔર ભેડ (નર વ માદા) દોનોં શામિલ હૈં) એક સાલ કા. ઈસ સે કમ ઉમ્મ હો તો કુરબાની જાઈઝ નહીં, ઝિયાદા હો તો જાઈઝ બલકે અફઝલ હૈ. હાં દુમ્બા યા ભેડ કા છ મહીને કા બચ્ચા અગર ઈતના બડા હો કે દૂર સે દેખને મેં સાલ ભર કા મા’લૂમ હોતા હો તો ઉસ કી કુરબાની જાઈઝ હૈ. (دُرُؤفَخْتار ج ۱ ص ۳۳) યાદ રખિયે ! મુત્લકન છ માહ કે દુમ્બે કી કુરબાની જાઈઝ નહીં, ઈસ કા ઈતના ફર્ખા (યા’ની તગડા) ઔર કદ આવર હોના ઝરૂરી હૈ કે દૂર સે દેખને મેં સાલ ભર કા લગે. અગર 6 માહ બલકે સાલ મેં એક દિન ભી કમ ઉમ્મ કા દુમ્બે યા ભેડ કા બચ્ચા દૂર સે દેખને મેં સાલ ભર કા નહીં લગતા તો ઉસ કી કુરબાની નહીં હોગી.

﴿6﴾ **કુરબાની કા જાનવર બે ઐબ હોના ઝરૂરી હૈ અગર થોડા સા ઐબ હો** (મ-સલન કાન મેં ચીરા યા સૂરાખ હો) તો કુરબાની મકરૂહ હોગી ઔર ઝિયાદા ઐબ હો તો કુરબાની નહીં હોગી.

(બહારે શરીઅત, જિ. ૩, સ. ૩૪૦)

ઐબદાર જાનવરોં કી તફ્સીલ જિન કી કુરબાની નહીં હોતી

﴿7﴾ ઐસા પાગલ જાનવર જો ચરતા ન હો, ઈતના કમઝોર કે હઙિયોં મેં મગ્ઝ ન રહા, (ઈસ કી અલામત યેહ હૈ કે વોહ દુબલે પન કી વજહ સે ખડા ન હો સકે) અન્યા યા ઐસા કાના જિસ કા કાના પન

करमाने मुस्तकاً صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : उस शप्स की नाक पाक आवूँड हो जिस के पास मेरा जिंक हो और वोह मुज पर दुरदे पाक न पढे. (१७)

आहिर हो, ऐसा भीमार जिस की भीमारी आहिर हो, (या'नी जो भीमारी की वजह से यारा न जाये) ऐसा लंगडा जो पुढ अपने पाँउं से कुरबान गाह तक न जा सके, जिस के पैदाईशी कान न हों या अेक कान न हो, वडूशी (या'नी जंगली) जानवर जैसे नीलगाय, जंगली बकरा या पुन्सा जानवर (या'नी जिस में नर व मादा दोनों की अलामतें हों) या जल्लावा जो सिर्फ गलीज भाता हो. या जिस का अेक पाँउं काट लिया गया हो, कान, द्रुम या यक्की अेक तिडाई (1/3) से जियादा कटे हुअे हों, नाक कटी हुई हो, दांत न हों (या'नी जड गअे हों), थन कटे हुअे हों, या पुशक हों ईन सब की कुरबानी ना जाईज है. बकरी में अेक थन का पुशक होना और गाय, भेंस में दो का पुशक होना, “ना जाईज” होने के लिये काई है. (०३१.०३० व १ जर्मुख्तार, अहारे शरीअत, जि. 3, स. 340, 341)

﴿8﴾ जिस के पैदाईशी सींग न हों उस की कुरबानी जाईज है. और अगर सींग थे मगर टूट गअे, अगर जड समेत टूटे हैं तो कुरबानी न होगी और सिर्फ ठीपर से टूटे हैं जड सलामत है तो हो जाअेगी. (१११ व ०५ जर्मुख्तार)

﴿9﴾ कुरबानी करते वक्त जानवर उछला कूदा जिस की वजह से अैब पैदा हो गया येह अैब मुजिर नहीं या'नी कुरबानी हो जाअेगी और अगर उछलने से अैब पैदा हो गया और वोह छूट कर भाग गया और झौरन पकड कर लाया गया और जब्ज कर दिया गया जब भी कुरबानी हो जाअेगी.

(अहारे शरीअत, जि. 3, स. 342, ०३१ व १ जर्मुख्तार)

करमाने मुस्तका علی اللہ تعالیٰ علوہا وسلم : जिस ने मुऊ पर रोऊ जुमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआकें होंगे. (कुरआन)

❖10❖ बेहतर यह है के अपनी कुरबानी अपने हाथ से करे जबके अच्छी तरह जल्द करना जानता हो और अगर अच्छी तरह न जानता हो तो दूसरे को जल्द करने का हुकूम दे मगर इस सूरत में बेहतर यह है के वक्ते कुरबानी वहां लाजिर हो.

(عالمگیری ج ۵ ص ۳۰۰)

❖11❖ कुरबानी की और उस के पेट में से जिन्दा बय्या निकला तो उसे भी जल्द कर दे और उसे (या'नी बय्ये का गोश्त) खाया जा सकता है और मरा हुआ बय्या हो तो उसे इंक दे के मुद्दर है. (बहारे शरीअत, जि. 3, स. 348) (कुरबानी हो गई और उस मरे हुआ बय्ये की मां का गोश्त खा सकते हैं)

❖12❖ दूसरे से जल्द करवाया और जुद अपना हाथ भी छुरी पर रख दिया के दोनों ने मिल कर जल्द किया तो दोनों पर बिस्मिल्लाह कहना वाजिब है. अक ने भी जान बूझ कर छोड़ दी या यह भयाल कर के छोड़ दी के दूसरे ने कल ली मुझे कलने की क्या जरूरत, दोनों सूरतों में जानवर हलाल न हुआ.

(दरमुख्तार १ ص ००१)

जल्द में कितनी रंगें कटनी चाहिए ?

सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुहंती अमजद अली आ'उमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं : जो रंगें जल्द में काटी जाती हैं वोह चार हैं. हुल्कूम यह वोह है जिस में सांस आती जाती है, मुरी इस से जाना पानी उतरता है इन दोनों

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुऱ पर दुऱुद शरीक पढे अल्लाह लुऱुऱु तुम पर रडमत भेजेगा. (अनसु)

के अगल भगल और दो रगें हैं जिन में भून की रवानी है ँन को व-दजैन कडते हैं. ञभुड की यार रगों में से तीन का कट ञाना काई है या'नी ँस सूरत में भी ञानवर हलाल हो ञाअेगा के अकसर के लिये वोही हुकम है ञो कुल के लिये है और अगर यारों में से हर अेक का अकसर हिससा कट ञाअेगा ञब भी हलाल हो ञाअेगा और अगर आधी आधी हर रग कट गऱ और आधी बाकी है तो हलाल नहीं.

(भडारे शरीअत, ञिल्द : 3, स. 312, 313)

दुरभानी का तरीका

(याहे दुरभानी हो या वैसे ही ञभुड करना हो) सुन्नत येह यली आ रही है के ञभुड करने वाला और ञानवर दोनों किभ्ला रू हों, हडारे अलाके (या'नी पाक व हिनद) में किभ्ला भगरिभ (WEST) में है, ँस लिये सरे ञभीडा (या'नी ञानवर का सर) ञूनूभ (SOUTH) की तरङ्ग होना याहिये ता के ञानवर बाअें (या'नी उलटे) पडलू लैटा हो, और उस की पीठ भशरिक (EAST) की तरङ्ग हो ताके उस का मुंह किभले की तरङ्ग हो ञाअे, और ञभुड करने वाला अपना दयां (या'नी सीधा) पाउं ञानवर की गरदन के दायें (या'नी सीधे) हिससे (या'नी गरदन के करीभ पडलू) पर रभे और ञभुड करे और भुद अपना या ञानवर का मुंह किभले की तरङ्ग करना तर्क किया तो भकडूड है.

(इतावा र-अविय्या, ञि. 20, स. 216, 217)

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है. (हाशिम)

कुरबानी का ज़ानवर ज़ब्त करने से पहले येह दूआ पढी जाये

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٤٩﴾

السُّرِّكِينَ ﴿٤٩﴾ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٠﴾

और ज़ानवर की गरदन के

करीब पहलू पर अपना सीधा पाँउ रख कर

पढ कर तेज़ छुरी से ज़ब्त ज़ब्त कर दीजिये. कुरबानी अपनी तरफ़ से हो तो

ज़ब्त के बा'द येह दूआ पढिये :

اللَّهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّي كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِيلِكَ إِبْرَاهِيمَ :

عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ وَحَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अगर दूसरे की तरफ़ से कुरबानी करें तो

उस का नाम लीजिये. (ब वक्ते ज़ब्त पेट पर घुटना या पाँउ न रखिये के

ईस तरह बा'त अवकात भून के धलावा गिज़ा भी निकलने लगती है)

म-दनी धस्तिज़ा : कुरबानी में देख कर दूआ पढते वक्त रिसाले पर

नापाक भून न लगने पाये ईस का फ़याल इरमाईये.

1 : तर-ज-मअे कन्जुल धमान : मैं ने अपना मुंड उस की तरफ़ किया जिस ने आस्मान व ज़मीन बनाये अेक उसी का हो कर और मैं मुश्रिकों में नहीं. (۷۹: الانعام)

2 : तर-ज-मअे कन्जुल धमान : बेशक मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानियां और मेरा ज़ना और मेरा मरना सब अद्लाह के लिये है जो रब सारे ज़लान का (۸۰: الانعام)

3 : उस का कोई शरीक नहीं मुझे येही हुकम है और मैं मुसल्मानों में हूँ. 4 : अे

अद्लाह (عَزَّوَجَلَّ) तेरे ही लिये और तेरी ही हुध तौईक से, अद्लाह के नाम से शुर्अ

अद्लाह सब से बडा है. 5 : अे अद्लाह (عَزَّوَجَلَّ) तू मुज से (ईस कुरबानी को) कबूल

इरमा जैसे तूने अपने फलील धब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام और अपने फलील मुहम्मद (बछारे शरीअत, जि. 3, स. 352)

करमाने मुस्तक! صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुज पर अक दुरेद शरीक पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अजर लिभता है और कीरात उबुद पहाड जितना है. (ज़िज़्ज़)

भकरी जन्ती जन्वर है

भकरी की धुंजत करो और इस से मिट्टी जाडो क्यूंके वोड जन्ती जन्वर है. (ऑफ़ोटोस بماثور الخطاب ج 1 ص 69 حديث 201)

जन्वरों पर रहम की अपील

गाय वगैरा को गिराने से पहले ही किब्ले का तअय्युन कर लिया जाये, लिटाने के बा'द बिल खुसूस पथरीली जमीन पर घसीट कर किब्ला रुख करना बे जमान जन्वर के लिये सप्त अजिय्यत का बा'इस है. जब्द करने में धतना न काटें के छुरी गरदन के मोहरे (हडी) तक पछोंय जाये के येड बे वजह की तकलीफ़ है फिर जब तक जन्वर मुकम्मल तौर पर ठन्डा न हो जाये न उस के पाउं काटें न पाल उतारें, जब्द कर लेने के बा'द जब तक रुह न निकल जाये छुरी कटे हुअे गले पर मस (TOUCH) करें न ही हाथ. बा'ज कस्साब जल्द "ठन्डी" करने के लिये जब्द के बा'द तडपती गाय की गरदन की जिन्दा पाल उधेड कर छुरी घोंप कर हिल की रगें काटते हैं, धसी तरह बकरे को जब्द करने के झौरन बा'द बेयारे की गरदन यटपा देते हैं, बे जमानों पर इस तरह के मजालिम न किये जायें. जिस से बन पडे उस के लिये जरूरी है के जन्वर को बिला वजह धजा पछोंयाने वाले को रोके. अगर बा वुजूदे कुदरत नहीं रोकेगा तो जुद भी गुनहगार और जहन्नम का हकदार होगा. दा'वते धस्लामी के धशाअती धदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ 1197 सईहात पर मुश्तमिल

करमाने मुस्तका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुइडे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अ/अ)

किताब, “बहारे शरीअत” जिल्द 3 सफ़हा 660 पर है :
 “जानवर पर जुल्म करना जिम्मी काफ़िर पर (अब दुन्या में सब काफ़िर हर्बी हैं) जुल्म करने से ज़ियादा बुरा है और जिम्मी पर जुल्म करना मुस्लिम पर जुल्म करने से भी बुरा है क्यूंके जानवर का कोई मुईन व मददगार अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा नहीं इस गरीब को इस जुल्म से कौन बचाये !”

(دَرْمُخْتَارُو رَدِّ الْمُخْتَارِ ج ٩ ص ٦٦٢)

मरने के बा'द मजलूम जानवर मुसल्लत हो सकता है

जुल्म करने के बा'द इह निकलने से कबल घुरियां यला कर के ज़बान जानवरों को बिला वजह तकलीफ़ देने वालों को उर ज़ाना याहिये कहीं मरने के बा'द अज़ाब के लिये येही जानवर मुसल्लत न कर दिया जाये. दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1012 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल” जिल्द 2 सफ़हा 323 ता 324 पर है :
 ईन्सान ने नाहक किसी यौपाये को मारा या उसे त्भूका प्यासा रखा या उस से ताकत से ज़ियादा काम लिया तो क्रियामत के दिन उस से उसी की मिस्ल बदला लिया जायेगा जो उस ने जानवर पर जुल्म किया या उसे त्भूका रखा. इस पर दर्जे जैल उदीसे पाक दलावत करती है.
 युनान्थे रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जहन्नम में अेक औरत को इस डाल में देखा के वोड लटकी हुई है और अेक बिल्ली उस के येडरे और सीने को नोय रही है और उसे

करमाने मुस्तफ़اً صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुझ पर अक बार दुइडे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रकमतें बेजता है. (स्म)

वैसे ही अजाब दे रही है जैसे उस (औरत) ने दुन्या में कैद कर के और लूका रफ कर उसे तकलीफ़ दी थी. इस रिवायत का छुक्रम तमाम जानवरों के हक में आम है. (الروايج ٢ ص ١٧٤)

कर ले तौबा रफ की रहमत है भरी

कध में वरना सजा होगी कडी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कुरबानी के वक्त तमाशा देपना कैसा ?

कुरबानी का जानवर अपने हाथ से ज़ब्त करना अफ़जल और भ वक्ते ज़ब्त भ निय्यते सवाबे आभिरत वहां छाज़िर रहना भी अफ़जल. मगर इस्लामी बहन सिर्फ़ उसी सूरत में वहां भडी हो सकती है जब के बे पर्दगी की कोई सूरत न हो म-सलन अपने घर की यार दीवारी हो, जाबेह (या'नी ज़ब्त करने वाला) महरम हो और छाज़िरिन में भी कोई ना महरम न हो. हां गैर महरम ना बाविग लउका मौजूद हो तो हरज नहीं. मइज़ हज़ूजे नईस (या'नी मजा लेने) की जातिर ज़ब्त होने वाले जानवर के गिर्द घेरा डालना, उस के यिल्लाने और तउपने इउकने से लुत्फ़ अन्होज़ होना, हंसना, कइकडे बुलन्ट करना और उस का तमाशा बनाना सरासर गइलत की अलामत है. ज़ब्त करते वक्त या अपनी कुरबानी हो रही हो उस

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोड जन्नत का रास्ता भूल गया. (ابن)

के पास हाजिर रहते वक्त अदाअे सुन्नत की नियत होनी याहिये और साथ ही येह भी नियत करे के में जिस तरह आज राडे फुदा में जानवर कुरबान कर रहा हूं, व वक्ते जरूरत **إِنِ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** अपनी जान भी कुरबान कर दूंगा. नीज येह भी नियत हो के जानवर ज्बु कर के अपने नईसे अम्भारा को भी ज्बु कर रहा हूं और आयन्दा गुनाहों से बयूंगा. ज्बु होने वाले जानवर पर रहम पाअे और गौर करे के अगर ईस की जगह मुजे ज्बु किया जा रहा होता और लोग तमाशा बनाते और बख्ये तालियां बजाते होते तो मेरी क्या कैफ़ियत होती !

ज्भीहा को आराम पढोयाईये

हजरते सय्यिदुना शदाद बिन औस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के सय्यिदुल मुर-सलीन, भा-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : अद्लाह तआला ने हर यीज के साथ नेकी करने का हुक्म दिया है, लिहाजा जब तुम किसी को कत्ल करो तो अहूसन (या'नी बहुत अच्छे) तरीके से कत्ल करो और जब तुम ज्बु करो तो अहूसन (या'नी पूब उम्दा) तरीके से ज्बु करो और तुम अपनी छुरी को अच्छी तरह तेज कर लिया करो और ज्भीहा को आराम दिया करो. (صَحِيح مُسْلِم ص ١٠٠٠ احديث ١٩٠٠) व वक्ते ज्बु रिजाअे ईलाही की नियत से जानवर पर रहम पाना कारे सवाब है जैसा के अेक सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बारगाहे रिसावत में अर्ज की : या रसूलद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मुजे बकरी ज्बु करने पर रहम आता है. इरमाया : “अगर उस पर रहम करोगे अद्लाह **عَزَّوَجَلَّ** भी तुम पर

इरमाने मुस्तक़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुइडे पाक न पढा तहकीक वोह
बदबपत हो गया. (उरुद)

रहूम इरमाओगा.”

(मुसुनइमाम अहमद बिन हनबल ज ० व ० ३०६ हदथ १००११)

जानवर को भूका प्यासा ज़बुह न करें

सदरुशरीअह, बदरुतरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं : कुरबानी से पहले उसे यारा पानी दे दें या'नी भूका प्यासा ज़बुह न करें और अेक के सामने दूसरे को न ज़बुह करें और पहले से छुरी तेज कर लें अैसा न हो के जानवर गिराने के बा'द उस के सामने छुरी तेज की जाओ. (बहारे शरीअत, जिल्द : 3, स. 352) यहां अेक अज्जबो गरीब खिकायत मुला-हजा हो युनान्ये उजरते सय्यिदुना अबू ज़'इर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ इरमाते हैं : अेक बार मैं ने ज़बुह के लिये बकरी लिटाई छतने में मशहूर बुजुर्ग उजरते सय्यिदुना अय्यूब सप्तियानी قُدَسَ سِرَّةُ النَّوَرَانِي छधर आ निकले, मैं ने छुरी जमीन पर डाल दी और गुफ़्त-गू में मशगूल हुवा, दर्री अस्ना बकरी ने दीवार की जड में अपने भुरों से अेक गढा षोढा और पाउं से छुरी उस में धकेल दी और उस पर भिड्डी डाल दी ! उजरते सय्यिदुना अय्यूब सप्तियानी قُدَسَ سِرَّةُ النَّوَرَانِي इरमाने लगे : अरे देओ तो सही ! बकरी ने येह क्या किया ! येह देओ कर मैं ने पुज्ता अज़्म कर लिया के अब कत्मी ली किसी जानवर को अपने हाथ से ज़बुह नहीं कइंगा.

(حياة الحيوان ج २ ص ११)

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! इस खिकायत से مَعَاذَ اللَّهِ येह मुराद नहीं के ज़बुह करना कोई गलत काम है. अस इस तरह के वाकिआत

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुइडे पाक पढा
(उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्रामत मिलेगी. (रुह))

बुजुर्गों के ग-ल-बअे डाल पर मब्नी छोते हैं. वरना मस्अला येडी
है के अपने हाथ से जब्द करना सुन्नत है.

बकरी छुरी की तरफ़ टेष रही थी

सरकारे अबद करार, शाफ़ेअे रोज़े शुमार, बि छजने
परवर दगार दो आलम के मालिको मुप्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
अेक आदमी के करीब से गुजरे, वोड बकरी की गरदन पर
पाँउं रष कर छुरी तेज कर रडा था और बकरी उस की तरफ़
टेष रही थी, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस से छशाद़ इरमाया :
“क्या तुम पडले अैसा नहीं कर सकते थे ? क्या तुम छसे कछ
मौतें मारना चाडते डो ? छसे लिटाने से पडले अपनी छुरी तेज
क्यूं न कर ली ?”

(أَلْمُسْتَدْرَكُ لِإِلْحَاكِم ج ٥ ص ٣٢٧ حدیث ٧٦٣٧، أَلْسَنُنُ الْكُبْرَى لِلْبَيْهَقِيِّ ج ٩ ص ٧١)
حدیث ٩١٤١، مُلْتَقَطًا مِنَ الْحَدِيثَيْنِ

जब्द के लिये टांग मत धसीटो !

अमीरुल मुअमिनीन डजरते सय्यिदुना इरुके आ'जम
رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अेक शप्स को देषा जो बकरी को जब्द करने के
लिये उसे टांग से पकड कर धसीट रडा है, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ
ने छशाद़ इरमाया : तेरे लिये षराबी डो, छसे मौत की तरफ़
अच्छे अन्दाज में ले कर जा.

(مُصَنَّفُ عَبْدِ الرَّزَّاقِ ج ٤ ص ٣٧٦ حدیث ٨٦٣٦)

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद शरीक़ न पढा उस ने जफ़ा की. (मिज़ान)

मज्जी पर रहम करना जाईसे मज्फ़िरत हो गया

किसी ने ज्वाब में हुज्जतुल ईस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي को देख कर पूछा : 'مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ؟' अद्लाह एज़्ज़ल ने आप के साथ क्या मुआ-मला इरमाया ? ज्वाब दिया : अद्लाह एज़्ज़ल ने मुझे बज्श दिया, पूछा : मज्फ़िरत का क्या सबब बना ? इरमाया : अक मज्जी सियाही (INK) पीने के लिये मेरे कलम पर बैठ गई, मैं लिखने से रुक गया यहां तक के वोह फ़ारिग हो कर उठ गई.

(لطائف الينن والآخلاق للشّعراى ص ۳۰۵)

मज्जी को मारना कैसा ?

याद रहे ! मज्जियां तंग करती हों तो उन को मारना जाईज है ताहम जब भी हुसूले नइअ या दइअे ज़रर (या'नी इअेदा हासिल करने या नुकसान जाईल करने) के लिये मज्जी या किसी भी बे ज़बान की जान लेनी पडे तो उस को आसान से आसान तरीके पर मारा जाअे ज्वाह म ज्वाह उस को बार बार जिन्दा कुयलते रहने या अक वार में मार सकते हों फिर भी ज़म्म जा कर पडे हुअे पर बिला ज़ररत ज़र्बे लगाते रहने या उस के बदन के टुकडे टुकडे कर के उस को तडपाने वगैरा से गुरेज किया जाअे. अकसर बअ्ये नादानी के सबब अ्यूटियों को कुयलते रहते हैं उन को ईस से रोका जाअे. अ्यूटी बहुत कमजोर छोटी है युटकी में उठाने या हाथ या जाडू से हटाने से उभूमन ज़म्मी हो जाती है, मौकअ की मुना-सबत से उस पर इंक मार कर भी काम यलाया जा सकता है.

करमाने मुस्तक। طلى الله تعالى عليه واله وسلم : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीक पडेगा में क्रियामत के दिन उस की शक़ाअत करंग्गा. (क़ुबल)

कुरबानी में अकीके का हिस्सा

कुरबानी की गाय या गींट में अकीके का हिस्सा हो सकता है।

(رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ٩ ص ٥٤٠)

धजतिमाध कुरबानी का गोश्त वजून कर के तक्सीम करना होगा

अगर शिकत में गाय की कुरबानी की तो ज़रूरी है के गोश्त वजून कर के तक्सीम किया जाये, अन्दाजे से तक्सीम करना ज़रूरी नहीं, करेंगे तो गुनहगार होंगे. बजुशी अके दूसरे को कम जियादा मुआफ़ कर देना काफ़ी नहीं. (मुलम्बस अज बहारे शरीअत, जि. 3, स. 335) हां अगर सब अके ही घर में रहते हैं के मिल कर ही भाटेंगे और भाएंगे या शु-रका अपना अपना हिस्सा लेना नहीं याहते, औसी सूरत में वजून करने की लाजत नहीं.

अन्दाजे से गोश्त तक्सीम करने के दो हीले

अगर शु-रका अपना अपना हिस्सा ले जाना याहते हों तो वजून करने की मशक़त से बचने के लिये दो हीले कर सकते हैं :

❶ ज़बु के बा'द इस गाय का सारा गोश्त अके औसे बालिग मुसल्मान को डिबा (या'नी तोइक़तन मालिक) कर दें जो उन की कुरबानी में शरीक न हो और अब वोह अन्दाजे से सब में तक्सीम कर सकता है

❷ दूसरा हीला इस से भी आसान है जैसा के कु-क़हाअे किराम रَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام़ इरमाते हैं : गोश्त तक्सीम करते वक़्त उस में कोई दूसरी जिन्स (म-सलन कलेज्ज मज्ज वगैरा) शामिल की जाये तो भी अन्दाजे से तक्सीम कर सकते हैं. (رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ٩ ص ٥٢٧) अगर कई चीज़ें डाली

करमाने मुस्तक। طلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अहमद)

हैं तो हर अक में से टुकड़ा टुकड़ा देना लाजिमी नहीं। गोश्त के साथ सिर्फ अक चीज देना भी काफी है। म-सलन तिल्ली, कलेज, सिरि पाये डाले हैं तो गोश्त के साथ किसी को तिल्ली दे दी, किसी को कलेज का टुकड़ा, किसी को पाया, किसी को सिरि। अगर सारी चीजों में से टुकड़ा टुकड़ा देना चाहें तब भी हरज नहीं।

कुरबानी के गोश्त के तीन हिस्से

कुरबानी का गोश्त षुद भी जा सकता है और दूसरे शप्स गनी (या'नी मालदार) या इकीर को दे सकता है भिला सकता है बल्के उस में से कुछ जा लेना कुरबानी करने वाले के लिये मुस्तलब है। बेहतर येह है के गोश्त के तीन हिस्से करे अक हिस्सा कु-करा के लिये और अक हिस्सा दोस्त व अहबाब के लिये और अक हिस्सा अपने घर वालों के लिये. (عالمگیری ج ۵ ص ۳۰۰) अगर सारा गोश्त षुद ही रभ लिया तब भी कोई गुनाह नहीं। मेरे आका आ'ला हजरत, ईमाम अहमद रजा जान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरमाते हैं : तीन हिस्से करना सिर्फ ईस्तिहबाभी अत्र है कुछ जरूरी नहीं, चाहे तो सब अपने सर्फ (या'नी ईस्ति'माल) में कर ले या सब अजीजों करीबों को दे दे, या सब मसाकीन को बांट दे. (इतावा र-जविय्या, जि. 20, स. 253)

वसियत की कुरबानी के गोश्त का मस्यला

मन्नत या मर्हूम की वसियत पर की जाने वाली कुरबानी का सब गोश्त कु-करा और मसाकीन को स-दका करना वाजिब है न षुद जाये न मालदारों को दे. (मापूज अज बहारे शरीअत, जि. 3, स. 345)

કરમાને મુસ્તકા علی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुइद पढो के तुम्हारा दुइद मुज तक पछोंयता है. (طرائق)

છ સુવાલાત વ જવાબાત

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! અબ દા'વતે ઇસ્લામી કે ઇશાઅતી ઇદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 112 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “ચન્દે કે બારે મેં સુવાલ જવાબ” સફહા 84 તા 88 સે “છ સુવાલાત વ જવાબાત” મુલા-હઝા હોં. યેહ હર ઇદારે બલકે હર મુસલ્માન કે લિયે મુફીદ હી નહીં મુફીદ તરીન હેં.

ચન્દે કી રકમ સે ઇજતિમાઈ કુરબાની કે લિયે ગાએ ખરીદના

સુવાલ : મઝહબી યા ફલાહી ઇદારે કે ચન્દે કી રકમ સે ઇજતિમાઈ કુરબાની કે લિયે બેચને કે વાસિતે ગાએ ખરીદી જા સક્તી હેં યા નહીં ?

જવાબ : ચન્દે કી રકમ કારોબાર મેં લગાના જાઈઝ નહીં. ઇસ કે લિયે ચન્દા દેને વાલે સે સરા-હતન યા'ની સાફ લફઝોં મેં ઇજાઝત લેની ઝરૂરી હે. (જો ઇસ કી ઇજાઝત દે તો સિફ ઉસી કે ચન્દે કી રકમ જાઈઝ કારોબાર મેં લગાઈ જા સક્તી હે યૂંહી બિલા ઇજાઝતે માલિક ઉસ કે દિયે હુએ ચન્દે કી રકમ કર્ઝ દેને કી ભી ઇજાઝત નહીં)

ગુ-રબા કો ખાલે લેને દીજિયે

સુવાલ : અગર કોઈ શખ્સ હર સાલ ગરીબોં કો ખાલ દેતા હો, ઉસ પર ઇન્ફિરાદી કોશિશ કર કે અપને મદ્રસે યા દીગર દીની

करमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيْبٌ وَالْوَسْمُ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद शरीफ न पढे तो वोह लोगो में से कजूस तरीन शप्स है. (नुबुह)

कामों के लिये ज्वाल लेना और गरीबों को महइम कर देने कैसा है ?

ज्वाल : अगर वाकेई कोई जैसा गरीब मुस्तहिक आदमी है जिस का गुजारा उसी ज्वाल या जकात व कित्रा पर मौकूई है तो अब उस को मिलने वाले इन अतिथ्यात की अपने ईदारे के लिये तरकीब कर के उस गरीब को महइम करने की हरगिज ईजाजत नहीं. (और अगर उन गरीबों का गुजारा ज्वाल वगैरा पर मौकूई न हो तो ज्वाल का मालिक जिस मसरफ में याहे दे सकता है म-सलन दीनी मद्रसे को दे दे) मेरे आका आ'ला उजरत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रज्जि ज्वालन عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنُ फरमाते हैं : अगर कुछ लोग अपने यहाँ की ज्वालें लाजत मन्द यतीमों, बेवाओं, मिसकीनों को देने याहें के इन की सूरते लाजत रवाई येही हो, उसे कोई वाईज (या'नी वा'ज कलने वाला) या मद्रसे वाला रोक कर मद्रसे के लिये ले ले तो येह उस का जुल्म होगा. وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ

(मुलज्जस अज इतावा र-जविथ्या, जि. 20, स. 501)

ज्वालों के लिये जे ज जिद मत डीजिये

सुवाल : अगर कोई शप्स अहले सुन्नत के किसी मद्रसे या किसी गरीब मुसल्मान को ज्वाल देने का वा'दा कर युका हो उस को ज ईस्वार अपने ईदारे म-सलन दा'वते ईस्लामी के लिये ज्वाल देने पर आमादा करना कैसा ?

इरमाने मुस्तक़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा ठिक हो और वोड मुज पर दुरदे पाक न पडे. (f)

जवाब : औसा न करे के यूं आपस में अदावत व मुना-इरत का सिद्धिसला होगी, इतिनों, गीबतों, युग्लियों, बढ गुमानियों, ँलाम तराशियों और दिल् आजारियों वगैरा गुनाहों के दरवाजे खुलेंगे. मेरे आका आ'ला डउरत, ँमामे अडले सुन्नत, मौलाना शाड ँमाम अडमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इतावा र-जविथ्या जिल्द 21 सङ्खडा 253 पर इरमाते हैं : मुसल्मानों में बिला वजहे शर-ई ँप्तिलाङ व इतिना पैदा करना नयाबते शैतान है. (या'नी औसे लोग ँस मुआ-मले में शैतान के नाँव हैं) उदीसे पाक में है : “इतिना सो रडा है उस के जगाने वाले पर अद्लाड عَزَّ وَجَلَّ की ला'नत.”

(الجامع الصغير للسيوطي ص 370 حديث 970)

सुन्नी मदारिस की जालें मत काटिये

सुवाल : अगर कोई कहे के मैं डर साल हुलां सुन्नी ँदारे को जाल देता हूं. उस को येड समजाना कैसा के ँस साल डमारे दीनी ँदारे म-सलन दा'वते ँस्लामी को जाल दे दीजिये.

जवाब : अगर वोड साडिब किसी औसी जगड जाल देते हैं जो के उस का सडीड मसरङ् है तो उस ँदारे को मडरूम कर के अपनी तन्जीम के लिये जाल डसिल कर लेना उस ँदारे वालों के लिये सदमे का बाँस होगा, यूं आपस में कशीदगी पैदा होगी लिडाजा डर उस काम से ँजतिनाब कीजिये जिस

इरमाने मुस्तकः صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरडे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआक होगे. (क्रमल)

से मुसल्मानों में बाहम रन्जिशें हों मुसल्मानों को नइरत व वइशत से बयाना बहुत जरूरी है. जैसा के हुजुरे अकरम, नूरे मुजस्साम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह्तशम بِشَرُّوْا وَا لَا تَقْرُوْا- : का ईशदि मुअज़्जम है : या'नी भुश भबरी सुनाओ और (लोगों को) नइरत न दिलाओ.

(صحيح بخاری ج ۱ ص ۴۲ حدیث ۶۹)

सुन्नी मद्रसे को पाल पुट टे आधिये

सुवाल : अगर कहीं दा'वते ईस्लामी के लिये पाल लेने पड़ोये, उस ने अक हमें दी और अक पाल बया कर रभते हुअे कहा के येह अहले सुन्नत के कुलां दारुल उलूम को देनी है. आप आधे घन्टे के बा'द मा'लूम कर लीजिये अगर वोह लेने न आअें तो येह पाल भी आप ही ले लीजिये. अैसी सूरत में क्या करना याहिये ?

जवाब : येह जेहन में रहें के कुरबानी की पालें ईकट्टी करना दा'वते ईस्लामी का "मक्सद" नहीं "जरत" है. दा'वते ईस्लामी का अक मक्सद नेकी की दा'वत आम करने की गरज से नइरतें मिटाना और मुस्ल्मानों के दिलों में मडुब्बतों के यराग जलाना भी है. तमाम सुन्नी ईदारे अक तरह से दा'वते ईस्लामी ही के ईदारे हैं और दा'वते ईस्लामी तमाम सुन्नी ईदारों की अपनी अपनी और अपनी सुन्नतों लरी तहरीक है. मुम्किना सूरत में अखी अखी नियतें कर के

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइद शरीफ़ पढो अल्लाह उजुज तुम पर रहमत भेजेगा. (अनसरी)

आप जुद उस सुन्नी दारुल उलूम को ખाल पछोंया दीजिये. इस तरह उशैदुल्लाह उजुज मुसल्मानों का दिल् भी पुश करने की सआदत हासिल होगी. ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्मे भजमे ह्ददायत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इसाद इरमाया : “इराइज के भा'द सभ आ'माल में अल्लाह उजुज को जियादा प्यारा मुसल्मान का दिल् पुश करना है.”

(अन्नज्म़ुल क़िबिरुल ल़िब्रानि ज ११ व ०९ ह्दइथ ११०७९)

अपनी कुरबानी की ખाल बेय दी तो ?

सुवाल : किसी ने अपनी कुरबानी की ખाल बेय कर रकम हासिल कर ली अब वोह मस्जिद में दे सकता है या नहीं ?

जवाब : यहां निय्यत का अे'तिबार है. अगर अपनी कुरबानी की ખाल अपनी ज़ात के लिये रकम के इवज बेयी तो यूं बेयना भी ना ज़इज है और येह रकम इस शप्स के हक में माले खभीस है और इस का स-दका करना वाजिब है लिहाजा किसी शर-इ इकीर को दे दे. और तौबा भी करे और अगर किसी कारे खैर के लिये म-सलन मस्जिद में देने ही की निय्यत से बेयी तो बेयना भी ज़इज है और अब मस्जिद में देने में कोइ हुरज (भी) नहीं.

इरमाने मुस्तका صلى الله تعالى عليه والوا وسلم : मुज पर कसरत से दुइडे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइडे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मगफिरत है. (मुश्म)

कस्साब के लिये 20 म-दनी इ्ल

- 1 पडले किसी माहिर गोशत इरोश की निगरानी में ज्बल वगैरा का काम सीख ले के उस ना तजरिबा कार के लिये येह काम ज़रिज नही जिस की वजह से किसी के जानवर के गोशत और ખाल वगैरा को उई व आदत (या'नी आम मा'भूल और दस्तूर) से हट कर नुकसान पड़ोयता हो.
- 2 माहिर गोशत इरोश को भी याहिये के जल्द बाजी या ला परवाही के सबब ખाल में उई व आदत से ज़रिज गोशत न लगा रहने दे, इसी तरह छीछडे उतारने में भी अहतियात से काम ले के इस में प्वाह म प्वाह बोटी और यरबी न यली ज़मे. नीज पाई जाने वाली हड्डियां वगैरा भी इंकने के बज्जमे टुकडे बना कर गोशत ही में डाल दे और माहिर गोशत इरोश को भी उई व आदत से हट कर गोशत या ખाल को नुकसान पड़ोयाना ज़रिज नही.
- 3 ब-करह ईद में उमूमन बडे जानवर का त्मेजा और ज्बान वगैरा निकाल कर सिरी का बकिय्या डिस्सा और पाअे के पुर इंक दिये जाते हैं, इसी तरह बकरे के सिरी पाअे के भी पाअे जाने वाले बा'ज अज्जा प्वाह म प्वाह ज़मेअ कर दिये जाते हैं अैसा न किया ज़मे अगर खुद जाना नही याहते तो किसी गरीब मुसल्मान को बुला कर अेहतिराम के साथ दीजिये के इस तरह के काई अइराद इन दिनो गोशत और

करमाने मुस्तका صلى الله تعالى عليه واله وسلم : जो मुज पर अेक दुइए शरीक पढता है अल्लाह ऊस के लिये अेक कीरात अजूर लिखता है और कीरात उहुए पढाड जितना है. (Jizrah)

यरबी वगैरा की तलाश में फिर रहे होते हैं. नीज येह भी याद रबिये के बडे जानवर के सिरी पाअे मुकम्मल यमडे समेत अस्ल ખाल से जुदा कर लेने की वजह से ખाल की कीमत में कमी आती है.

❖4❖ आम दिनों में पूंछ का गोशत दूसरे गोशत के साथ वजून में बेया जाता है जबके कुरबानी के जानवर की पूंछ उभूमन ખाल में ही जाने देते हैं इस से इस का गोशत जाअेअ हो जाता है, बलके बडे जानवर में से बा'ज अवकात खाल समेत पूंछ काट कर कैंक देते हैं, येह तरीका भी गलत है, इस तरह करने से खाल की कीमत में भी कमी आती है.

❖5❖ जिन मुल्कों में खाल काम में ले ली जाती है (म-सलन पाक व छिन्द में) वहां उई से हट कर ख्वाह म ख्वाह अैसी जगह "कट" लगा देना जाईज नहीं जिस से खाल की कीमत में कमी आ जाअे. गोशत इरोशों को याहिये के जिस तरह अपने जाती जानवर की खाल संभाल संभाल कर उधेउते हैं, दूसरों के मुआ-मले में भी इसी तरह करें.

❖6❖ दुम्बे की यक्की की खाल उधेउने में इस बात का खयाल रबिये के यरबी खाल में बाकी न रहे.

❖7❖ छीछे और यरबी अेक तरह जम्भ कर के आखिर में छीछों की आड में यरबी भी उठा ले जाना धोका और योरी है. पूछ कर

﴿8﴾ इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुइडे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (७)

भी न लें के “सुवाल” है और बिला हाजते शर-ई सुवाल जाईज नहीं. इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : जो शप्स हाजत के बिगैर लोगों से सुवाल करता है वोह मुंह में अंगारे डालने वाले की तरह है. (شُعْبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٢٧١ حديث ٣٠١٧)

﴿8﴾ बसा अवकात कुरबानी के जानवर में से बोटी का बेहतरीन गोल लोथडा चुपके से टोकरी में सरका लिया जाता है येह साफ़ साफ़ थोरी है. बिला ईजाजते शर-ई मांग कर लेना भी हुरुस्त नहीं. इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ है : “जो माल में ईजाफ़े के लिये लोगों से सुवाल करता है वोह अंगारे मांगता है, अब उस की मरजी है के अंगारे कम जम्अ करे या ज़ियादा.” (مسلم ص ١٨٠ حديث ١٠٤١)

हां अगर लोगों में गोशत बांटा जा रहा है और गोशत इरोश ने भी लेने के लिये हाथ बढ़ा दिया तो हरज नहीं.

﴿9﴾ गोशत का हर वोह हिस्सा जो आम दिनों में ईस्ति'माल में लिया जाता है, कुरबानी के दिनों में भी काम में लिया जाये. ईइडे और थरबी वगैरा के टुकडे कर के गोशत के साथ तकसीम कर देना मुनासिब है, ईस तरह की चीजों को ईंका न जाये अगर फुद जाना या गोशत के साथ तकसीम करना नहीं चाहते तो यूं भी हो सकता है के जो जइरत मन्द लेना चाहे उसे बुला कर दे दिया जाये या किसी के हवाले कर दिया जाये के किसी जइरत मन्द को दे दे बडके अहत्तियात ईसी में है के फुद ही किसी मुसल्मान के हवाले कर दीजिये. येह मस्अला याद रहे

इरमाने मुस्तका : طَيِّبُ اللّٰهِ تَطَيَّبَ عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ : जिस ने मुज पर एक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह उस पर इस रडमतें बेजता है. (स्)

के गैर मुस्लिम तंगियों वगैरा को ખાલ तो क्या अक भोटी भी कुरबानी के गोशत में से देना जाईज नहीं.

❦10❧ अगर जानवर के गले में रस्सी, नथ, यमडे का पट्टा, धुंगुर, डार वगैरा है तो इन सब को छुरी से जूंतू काट कर नहीं बल्के काईदे के मुताबिक फोल कर निकाल लेना चाहिये ता के नापाक न हों. बिगैर निकाले जभ्द करने की सूरत में येह चीजें पून आलूद हो जाती हैं और मस्मला येह है के बिला हाजत किसी पाक चीज को कस्टन (या'नी जान बूज कर) नापाक करना हराम है. बिलइर्ज नापाक हो भी जाअें तब भी इन को कैंक न दिया जाअे, पाक कर के फुद ईस्ति'माल में लाअें या किसी मुसल्मान को दे दें. याद रभिये ! तज्जीअे माल (या'नी माल जअेअ करना) हराम है.

❦11❧ छुरी डेरने से कबल जानवर के गले की ખાલ नर्म करने के लिये अगर पाक पानी के बरतन में नापाक पून वाला हाथ डाल कर युल्लू भरा तो युल्लू का और उस बरतन का तमाम पानी नापाक हो गया. अब येह पानी गले पर मत डालिये. इस का आसान सा हल येह है के जिन का जानवर है उसी से कडिये वोह पाक साई पानी का गिलास भर कर अपने हाथ से जानवर के गले पर डालिये मगर येह अेहतियात की जाअे के गिलास से पानी डालने या छिउकने के दौरान भीय में न कोई अपना पून आलूद हाथ डालिये न ही पानी वाले गले पर पून वाला हाथ मले येह बात सिई कुरबानी के लिये ખાस नहीं, जब भी जभ्द करें इस का ખयाल रभिये.

करमाने मुस्तक। ضلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : जो शम्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (प्रान)

❖12❖ अब्ज के भा'द पून आलूद छुरी और उसी पून से लिथडे हुमे डाय घोने के लिये पानी की बाव्टी में डाल देने से छुरी और डाय पाक नहीं छोते उलटा बाव्टी का सारा पानी भी नापाक हो जाता है. अक्सर इसी तरह के नापाक पानी से पाल उधेउने में भी मदद ली जाती है और येही पानी गोशत के अन्दरूनी छिस्से में जम्भ शुदा पून घोने के लिये भी बहाया जाता है गोशत के अन्दर का पून पाक होता है मगर नापाक पानी बहाने के सबब येह नुक्सान होता है के येह नापाक पानी जहां जहां से गुजरता है गोशत के पाक छिस्से को भी नापाक करता यला जाता है. औसा मत कीजिये.

❖13❖ अज्जर गोशत फ़रोश के लिये येह ज़रूरी है के ब-करल छेद के उई व आदत (या'नी दस्तूर) के मुताबिक कुरबानी के गोशत की ओटियां बना कर दे. भा'ज कस्साब जल्द बाजी के सबब गोशत के बडे बडे टुकडे बनाते, नलियां भी सहीह से तोड कर नहीं देते और सिरी पाअे भी साबित छोड कर यल देते हैं, औसा न किया करें. इस तरह कुरबानी करवाने वाले सप्त आजमाईश में आ जाते हैं और बसा अवकात सिरी पाअे वगैरा केंकने पड जाते हैं. भा'ज लोग सभ्र करने के बजाअे कस्साब को बुरे बुरे अल्काब और गालियों से नवाजते और पूब गुनाहों त्मरी भाते करते हैं. हां, ईजारा करते वक्त कस्साब ने कड दिया हो के सिरी पाअे बना कर नहीं दूंगा तो अब साबित छोडने में कोई हरज नहीं.

करमाने मुस्तका : طي الله تعالى عليا وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद पैक न पढा तहकीक वोह
बदअप्त हो गया. (उरुग)

❖14❖ बा'ज कस्साब हिर्स के सबब बहुत जियादा जानवर “बुक” कर लेते हैं और अक जगह छुरी फेर कर दूसरी जगह यले जाते हैं, फिर उधर गला काट कर पहली जगह वापस आ कर भाल उधेडने लगते हैं और अब दूसरी जगह वाले “धन्तिजार” की आग में सुलगते हैं। इस तरह लोग बहुत तकलीफ में आते, बातें बनाते, कस्साब को भुरा भला कहते हैं और फिर कई गुनाहों के दरवाजे खुलते हैं। कस्साबों को याहिये के काम उतना ही लें जितना सलीके के साथ कर सकें और किसी को शिकायत का मौकअ न मिले।

❖15❖ कस्साब को याहिये के गोश्त बनाते वक्त हराम अजजा जुदा कर के फेंक दे। जिसे गोश्त खाना हो उस पर जभीहा की हराम चीजों की शनाप्त ईर्ज और मकड़हे तहरीमी अजजा की पहचान वाजिब है ताके गुनाहों भरी चीजें न खा डाले। (गोश्त के न भाअे जाने वाले अजजा का भयान आगे आ रहा है)

❖16❖ गोश्त इरोश को याहिये के कुरबानी के दिनों में पैसे कमाने की हिर्स के सबब शरीअत की खिलाफ वर्जा करते हुअे 100 जानवर गलत सलत काट कर अपनी आपिरत दाव पर लगाने के भजाअे शरीअत के मुताबिक बेशक सिर्फ अक ही जानवर काटे, اِنَّ كَيْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ दोनों जहानों में इस की पूब भ-र-कतें पाअेगा के पैसों के लालय में जल्ल बाजी की वजह से इस काम में बसा अवकात बहुत सारे गुनाह करने पड जाते हैं।

इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर दस भरतबा जुब्द और दस भरतबा शाम दुड़दे पाक पढा
 उसे क्रियात के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अबुलक़ासिम)

﴿17﴾ बा'ज गोशत इरोश बेयने के बडे (और छोटे) जानवर की ખાલ उतार लेने के बा'द गोशत के अन्दर मौजूद हिल में कट लगा कर उस में या भून की बडी नस में पाँचप के जरीअे पानी यढाते हैं इस तरह करने से गोशत का वज़न बढ जाता है. इस तरह का गोशत धोके से बेयना भी हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है. बा'ज मुर्गी का गोशत बेयने वाले जब्द के बा'द मुर्गी के पर उतार कर पेट की सफ़ाई कर के सिर्फ़ हिल उस में लगा रहने देते और उस मुर्गी को तकरीबन 15 मिनट के लिये पानी में डाल देते हैं, इस तरह इस के गोशत का वज़न तकरीबन 150 ग्राम बढ जाता है. जब्द शुदा कमज़ोर बकरे के ठन्डा होने के बा'द उस की बोंग के जरीअे गोशत में मुंड से हवा त्तर कर गोशत को कुला देते हैं, गाहक गोशत ले कर घर पड़ोयता है तो हवा निकल चुकी होती है और गोशत की तह वाली हड्डियां रह जाती हैं. येह भी सरासर धोका है, बिल ખુसूस कुरबानी के दिनो में वज़न से बेये जाने वाले जिन्दा बकरो वगैरा को बेसन (या'नी यने का आटा) पिला कर उपर भूब पानी वगैरा पिला कर उन का वज़न बढा दिया जाता है, जैसे जानवर भी यूं धोके से बेयना गुनाह है. याद रभिये ! हराम कमाई में कोई त्तराई नही. इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने हराम का अेक लुकमा ખाया उस की ચાલીस दिन की नमाज़ें कबूल नही की जाओंगी और उस की दुआ ચાલીस दिन तक ना मकबूल होगी. (अलफ़रदूस बमाथुर अलख़ाब 3/ص 91 حديث 5853) मज़ीद अेक रिवायत में है : “इन्सान के पेट में जब हराम का लुकमा पडता है, जमीन व

इरमाने मुस्तका : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीक न पढा उस ने जका की. (मुराबात)

आस्मान का हर इरिश्ता उस पर उस वक्त तक ला'नत करता है जब तक के वोह हराम लुकमा उस के पेट में रहे और अगर इसी हालत में मर गया तो उस का ठिकाना जहन्नम होगा.”

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص १०)

﴿18﴾ दुरुस्त काम करने में यकीनन वक्त जियादा सर्ई होगा, इस पर हो सकता है हमपेशा अइराद मजाक भी उडाओं मगर इस पर सभ्र कीजिये, ખબરदार ! कहीं शैतान लडाई त्मिडाई में उलजा कर गुनाहों में न इंसा दे !

﴿19﴾ गोश्त का जो छिस्सा गोबर या जब्द के वक्त निकले हुअे पून वाला हो जाअे, उस को जुदा रभिये और गोश्त के मालिक को बता दीजिये ताके वोह उसे अलग से पाक कर सके. पकाने में अगर अेक भी नापाक बोटी डाल दी तो वोह पूरी देग का कोरमा या बिरयानी नापाक कर देगी और इस का जाना हराम हो जाअेगा. (याद रहे ! जब्द के भा'द गरदन के कटे हुअे छिस्से पर बया हुवा पून और गोश्त के अन्दर म-सलन पेट में या छोटी छोटी रगों में जो पून रह जाता है वोह नीज दिल्, कलेज वगैरा का पून पाक होता है. हां दमे मस्कूह या'नी जब्द के वक्त जो पून भल कर निकल युका वोह अगर कटे हुअे गले वगैरा को लग गया तो नापाक कर देगा.)

﴿20﴾ जानवर काटने और कटवाने वाले को याहिये के आपस में उजरत तै कर लें क्यूंके मस्अला येह है के जहां दला-लतन (UNDER STOOD) या'नी अलामत से मा'लूम हो, या सरा-हतन (या'नी

करमाने मुस्तका على الله تعالى عليه واليوسلم : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीक पढेगा में क्रियामत के दिन उस की शक्राअत करेगा. (क्रमल)

पुल्लम पुल्ला, आछिरन) उजरत साभित हो वहां तै करना वाजिब है. जैसे मौकअ पर तै करने के बजाये इस तरह कइ देना : काम पर आ जाओ देख लेंगे, जो मुनासिब होगा दे देंगे, भुश कर देंगे, पर्या भिलेगी वगैरा अल्फाज क्त्अन नाकाई हैं. बिगैर तै किये उजरत लेना देना गुनाह है, तै शुदा से आँद तलब करना भी मन्नूअ है. हां जहां औसा मुआ-मला हो के काम करवाने वाले ने कहा : कुछ नहीं दूंगा, उस ने कइ दिया : कुछ नहीं लूंगा. और फिर काम करवाने वाले ने अपनी मरजी से दे दिया तो इस लैन दैन में कोई हरज नहीं.

गोशत के 22 अजजा जो नहीं जाये जाते

इँजाने सुन्नत जिह्द अव्वल ओपर से सइहा 405 ता 408 पर है : मेरे आका आ'ला हजरत ईमाम अहमद रजा पान करमाते हैं : हलाल जानवर के सब अजजा हलाल हैं मगर बा'ज, के हराम या मन्नूअ या मक़ूह हैं

﴿1﴾ रगों का पून ﴿2﴾ पिता ﴿3﴾ कुकना (या'नी मसाना) ﴿4,5﴾ अलामाते मादा व नर ﴿6﴾ बैजे (या'नी कपूरे) ﴿7﴾ गुदूद ﴿8﴾ हराम मज्ज ﴿9﴾ गरदन के दो पट्टे, के शानों तक पिये होते हैं ﴿10﴾ जिगर (या'नी कलेज) का पून ﴿11﴾ तिल्ली का पून ﴿12﴾ गोशत का पून के बा'दे जब्द गोशत में से निकलता है ﴿13﴾ हिल का पून ﴿14﴾ पित या'नी वोह

करमाने मुस्तका : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظًا وَالْوَسْمَاءُ : मुज पर दुर्रदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अ. 11)

उर्द पानी, के पित्ते में छोटा है ﴿15﴾ नाक की रतूबत, के लेड में अकसर छोती है ﴿16﴾ पापाने का मकाम ﴿17﴾ ओजडी ﴿18﴾ आंतें ﴿19﴾ नुत्फा¹ ﴿20﴾ वोह नुत्फा, के पून छो गया ﴿21﴾ वोह (नुत्फा) के गोशत का लोथडा छो गया ﴿22﴾ वोह के (नुत्फा) पूरा ज्ञानवर बन गया और मुर्दा निकला या बे जब्ज मर गया. (इतावा र-जविय्या, जि. 20, स. 240, 241)

समजदार कस्साब बा'ज मन्नूआ यीजें निकाल दिया करते हैं मगर बा'ज में एन को भी मा'लूमात नहीं छोतीं या बे अेहतियाती भरतते हैं. लिहाजा आज कल उमूमन ला एल्मी की वजह से जो यीजें सालन में पकाई और भाई जाती हैं उन में से यन्द की निशान देही करने की कोशिश करता हूं.

पून

जब्ज के वक्त जो पून निकलता है उस को “दमे मर्रूह” कहते हैं. येह नापाक छोता है एस का पाना डराम है. बा'दे जब्ज जो पून गोशत में रह जाता है म-सलन गरदन के कटे हुअे हिस्से पर, दिल के अन्दर, कलेज और तिल्ली में और गोशत के अन्दर की छोटी छोटी रगों में येह अगर्ये नापाक नहीं मगर एस पून का भी पाना मन्नूअ है. लिहाजा पकाने से पहले सफ़ाई कर लीजिये. गोशत में कई जगह छोटी छोटी रगों में पून छोता है उन की निगह दाशत काई मुश्किल है, पकने के बा'द वोह रगें काली डोरी की तरह छो जाती हैं. पास कर

1 : मनी

करमाने मुस्तक। ملى الله تعالى عليه واله وسلم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुर्इद पढ़ो के तुम्हारा दुर्इद मुझ तक पहुंचता है. (طبرانی)

भेजे, सिरी पात्रे और मुर्गी की रान और पर के गोशत वगैरा में भारीक काली डोरियां देभी जाती हैं आते वक्त ँन को निकाल दिया करें. मुर्गी का हिल भी साभित न पकाईये, लम्बाई में यार थीरे कर के ँस का भून पडले अखी तरड साई कर लीजिये.

हराम भग्न

येड सकेद डोरे की तरड होता है जो के भेजे से शुद्ध हो कर गरदन के अन्दर से गुजरता हुवा पूरी रीठ की हडी में आभिर तक जाता है. माहिर कस्साभ गरदन और रीठ की हडी के बीच से दो परकाले या'नी दो टुकडे कर के हराम भग्न निकाल कर ईंक देते हैं. मगर बारहा भे अेहतियाती की वजह से थोडा बहुत रड जाता है और सालन या बिरयानी वगैरा में पक भी जाता है. युनान्चे गरदन, यांप और कभर का गोशत धोते वक्त हराम भग्न तलाश कर के निकाल दिया करें. येड मुर्गी और दीगर परिन्दों की गरदन और रीठ की हडी में भी होता है, पकाने से कबल ँस को निकालना बहुत मुश्किल है लिहाजा आते वक्त निकाल देना याहिये.

पहे

गरदन की भजभूती के लिये ँस की दोनों तरफ पीले रंग के दो लम्भे लम्भे पहे कन्धों तक भिये हुअे होते हैं. ँन पहेों का भाना भन्नूअ है. गाय और बकरी के तो आसानी से नजर आ जाते हैं मगर मुर्गी और परिन्दों की गरदन के पहे भ आसानी नजर नहीं आते, आते वक्त हूंड कर या किसी जानने वाले से पूछ कर निकाल दीजिये.

गुदद

गरदन पर, हडक में और आ'ज जगह यरभी वगैरा में छोटी बडी कहीं सुर्भ और कहीं मटियाले रंग की गोल गोल गांठें

इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइइ शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शप्स है. (त्रुमे ७)

होती हैं एन को अ-रबी में गुद्दा और उर्दू में गुद्दू कइते हैं. येह भी मत पाँयये, पकाने से पइले हूँ कर निकाल दीजिये. अगर पके हुअे गोशत में भी नजर आ जाअे तो निकाल दीजिये.

कपूरे

कपूरे को ખુस्या, झोता या बैजा भी कइते हैं एन का खाना मकड़डे तइरीमी है. येह बैल, अकरे वगैरा (नर या'नी मुजकर) में नुमायां होते हैं. मुर्गे (नर) का पेट खोल कर आंतें हटाअेंगे तो पीठ की अन्दरूनी सतह पर अन्डे की तरह सफ़ेद दो छोटे छोटे भीज नुमा नजर आअेंगे येही कपूरे हैं. एन को निकाल दीजिये. अइसोस ! मुसल्मानों की भा'ज होटलों में दिल्, कलेज के एलावा बैल, अकरे के कपूरे भी तवे पर लून कर पेश किये जाते हैं गालिअन होटल की खान में एस डिश को "कटाकट" कहा जाता है. (शायद एस को "कटाकट" एस लिये कइते हैं के गालक के सामने ही दिल् या कपूरे वगैरा डाल कर तेज आवाज से तवे पर काटते और लूनते हैं एस से "कटाकट" की आवाज गूंजती है)

ओअडी

ओअडी के अन्दर गलाजत लरी होती है एस का खाना मकड़डे तइरीमी है मगर मुसल्मानों की अेक ता'दाद है जे आज कल एस को शौक से खाती है.

“या रसूलव्लाह आप पर खान कुरखान” के बाँस हुइइ की निस्खत से कुरखानी की खालें जम्अ करने वाले

के लिये 22 निय्यतें और अेडतियातें

दो इरामीने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ﴿1﴾ “मुसल्मान की निय्यत उस के अमल से अेडतर है.” (मुअज्जिब १८० व १८१ हदित ०१६२)

﴿۝۱﴾ इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवुद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइदे पाक न पढे. (१/५)

﴿2﴾ “अच्छी नियत बन्दे को जन्नत में दाखिल कर देती है.”

(ألفردوس بمأثور الخطّاب ج ٤ ص ٣٠٠ حديث ٦٨٩٠)

दो म-दनी इल : (1) बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अ-मले भैर का सवाब नहीं मिलता (2) जितनी अच्छी नियतें जियादा, उतना सवाब भी जियादा.

﴿1﴾ रिजाअे ँलाही عَزَّ وَجَلَّ के लिये अच्छी अच्छी नियतें करता हूं

﴿2﴾ हर हाल में शरीअत व सुन्नत का दामन थामे रहूंगा ﴿3﴾

कुरबानी की ખालों के लिये भागदौड के जरीअे दा'वते ईस्लामी के साथ

तआवुन कइंगा ﴿4﴾ कोई लाभ बढ सुलूकी करे मगर ईजहारे गुस्सा

और ﴿5﴾ बढ अप्लाकी से परहेज कर के दा'वते ईस्लामी की नामूस व

ईज्जत की डिङ्गलत कइंगा ﴿6﴾ कुरबानी की ખालों के सबब लाभ

मसइक़ियत हुई बिला उज़रे शर-ई किसी भी नमाज की जमाअत तो

क्या तकभीरे उिला भी तर्क नहीं कइंगा ﴿7﴾ पाक लिबास मअ ईमामा

शरीफ़ और तहबन्द शोपर वगैरा में उल कर नमाजों के लिये साथ

रभूंगा (इस्बे जइरत बस्ते वगैरा पर भी रभ सकते हैं. ईस की ખास ताकीद है,

क्यूंके ज्बल के वक्त निकला हुवा भून नजासते गलीजा और पेशाब की तरह

नापाक है और खालें जम्अ करने वाले का अपने कपडे पाक रभना ईन्तिहाई

दुश्वार है. बहारे शरीअत जिल्द 1 सइहा 389 पर है : “नजासते गलीजा का

हुकम येह है के अगर कपडे या बदन में अक दिरहम से जियादा लग जाअे तो उस

का पाक करना इर्ज़ है, बे पाक किये नमाज पढ ली तो होगी ही नहीं और कस्दन

पढी तो गुनाह भी हुवा और अगर ब नियते ईस्तिफ़ाइ (या'नी ईस हुकमे शरीअत

को डलका जान करे) है तो कुइ हुवा और अगर दिरहम के बराबर है तो पाक

करना वाजिब है के बे पाक किये नमाज पढी तो मकइहे तहरीमी हुई

या'नी औसी नमाज का ईआदा वाजिब हुवा और कस्दन पढी तो गुनहगार

इरमाने मुस्तका صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर रोके जुमुआ दो सो बार दुरेदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआक छोणे. (अहमद)

भी हुवा और अगर दिरहम से कम है तो पाक करना सुन्नत है के बे पाक किये नमाज हो गई मगर खिलाई सुन्नत हुई और इस का ईआदा बेहतर है.” ﴿8﴾ मस्जिद, घर, मकतब और मद्रसे वगैरा की दरियों, यटाईयों, कारपेट और दीगर चीजों भून आलूद होने से बयाउिंगा (वुजूभाने के गीले इर्श या पाअेदान वगैरा पर भी भून आलूद पाउं समेत जाने से बयने और वुजू करते हुअे भूब अेइतियात करने की जरूरत है वरना नजासत की आलू-दगी और नापाक पानी के छींटों से अपने साथ दूसरों को भी नापाक कर डालने का अेइतमाल रहेगा) ﴿9﴾ भून आलूद बढबूदार कपडों समेत मस्जिद में नहीं जाउिंगा (बढबू न भी आती हो तब भी नापाक बदन या कपडा या चीज मस्जिद में ले जाना मन्अ है. जम्म, इंडे, कपडे, ईमामे, यादर, बदन या हाथ मुंड वगैरा से बढबू आती हो तो तब भी मस्जिद के अन्दर दाखिल होना हराम है. ईजाने सुन्नत जिह्द अव्वल सइहा नीये से 1217 पर है : मस्जिद को (बढ) भू से बयाना वाजिब है व लिहाजा मस्जिद में मिट्टी का तेल जलाना हराम, मस्जिद में दिया सलाई (या'नी मायिस की तीली) सुलगाना हराम, हत्ताके हदीस में ईशाई हुवा : मस्जिद में कय्या गोशत ले जाना जाईज नहीं. (अबिन माजह ११३ १-१६८६)) हालांके कय्ये गोशत की (बढ) भू बहुत फईक (या'नी हलकी) है) ﴿10﴾ कलम, रसीद बुक, पेड, गिलास, याय के पियाले वगैरा पाक चीजों को नापाक भून नहीं लगने दूंगा (इतावा र-उविय्या मुअर्रजा जिह्द 4 सइहा 585 पर है “पाक चीज को (बिला ईजाजते शर-ई) नापाक करना हराम है”) ﴿11﴾ जो दूसरे ईदारे को ખाल देने का वा'दा कर युका डोगा उस को बढ अइदी का भशवरा नहीं दूंगा (आसान तरीका येह है के अखी अखी निय्यतों के साथ आप सारा ही साल मु-तवज्जेह रइये और ખुद ही पडल कर के ખाल बुक करवा कर रबिये) ﴿12﴾ अपनी तै शुदा ખाल अगर किसी

﴿۱۳﴾ इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुइद शरीफ़ पढो अद्लाह एज़ुजल तुम पर रहमत भेजेगा. (अबु) (۱)

सुन्नी एदारे का आदमी लेने नहीं पछोंया, या ﴿13﴾ ग-लती से मेरे पास आ गई तो ब निय्यते सवाब उधर दे आउंगा ﴿14﴾ जो भाल देगा हो सका तो उस को मक-त-बतुल मदीना का कोई रिसाला या पेम्फ्लेट तोड़फ़तन पेश करुंगा ﴿15﴾ नीज़ उस को “शुक्रिया, صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ﴿۱۳﴾ इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ﴿۱۴﴾ इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ : ﴿۱۵﴾ इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ﴿۱۶﴾ इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ﴿۱۷﴾ इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ : ﴿۱۸﴾ इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ : ﴿۱۹﴾ इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ : ﴿۲०﴾ इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ : ﴿۲१﴾ इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ : ﴿۲२﴾ इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ :

या'नी जिस ने लोगों का शुक्रिया अदा न किया उस ने अद्लाह एज़ुजल का भी शुक्र अदा न किया. (त्रुमुन्डी ३ व ३८६ हदित १९१२) ﴿16﴾ भाल देने वाले पर इन्डिरादी कोशिश कर के उस को सुन्नतों त्भरे इजतिमाअ और ﴿17﴾ म-दनी काङ्किलों में सङ्कर वगैरा की रगबत दिलाउंगा ﴿18﴾ भा'द में भी उस से राबिता रभ कर भाल देने के अेहसान के बदले में उसे म-दनी माडोल में लाने की कोशिश करुंगा अगर ﴿19﴾ वोह म-दनी माडोल में हुवा तो उसे म-दनी काङ्किले का मुसाङ्किर या ﴿20﴾ म-दनी इन्आमात का आमिल बनाउंगा या ﴿21﴾ कोई न कोई मजीद म-दनी तरकीब करुंगा (जिम्मेदारान को याडिये के भा'द में वक्त निकाल कर भाल देने वालों का शुक्रिया अदा करने ज़रूर ज़ाअें नीज़ इन सभ मोहसिनीन को अलाकाई सत्ह पर या जिस तरह मुनासिब हो ईकह्हा कर के मुप्तसरन नेकी की दा'वत और लंगरे रसाईल वगैरा की तरकीब इरमाअें. रसाईल की दा'वते इस्लामी के यन्दे से नहीं जुदागाना तरकीब करनी होगी) ﴿22﴾ दूर व नजदीक जहां से भी भाल उठाने (या बस्ता या कोई सा काम संभालने) का जिम्मेदार इस्लामी भाई हुक्म इरमाअेंगे, भिला रदो कद ईताअत करुंगा. (येह निय्यतें बहुत कम हैं, ईल्मे निय्यत से आशना मजीद बहुत सारी निय्यतें निकाल सकता है)

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुज पर कसरत से दुइदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइदे पाक पढेना
तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है. (इम्रान)

ओक अहम शर-ई मरअला

हमेशा कुरबानी की ढालें और नइली अतिय्यात “कुल्ली इप्तियारात” या’नी किसी भी नेक और ज़रूरी काम में अर्च कर लिये जाओ इस निय्यत से इनायत इरमाया करें क्यूंके अगर मजूस कर के दिया म-सलन कडा के, “येह दा’वते इस्लामी के मदसे के लिये है” तो अब मस्जिद या किसी और मद (या’नी उन्वान) में इस का इस्ति’माल करना गुनाह हो जायेगा. लेने वाले को भी याहिये के अगर किसी मजूस काम के लिये भी यन्दा ले तो अइतियातन कइ दिया करे के हमारे यहाँ म-सलन दा’वते इस्लामी में और भी दीनी काम होते हैं, आप हमें “कुल्ली इप्तियारात” दे दीजिये ताके येह रकम दा’वते इस्लामी जहाँ मुनासिब समजे वहाँ नेक और ज़रूरी काम में अर्च करे. याद रहे ! यन्दा देने वाला “हां” करे और वोह यन्दे या ढाल वगैरा का अस्ल मालिक हो तो ही “इज्जत” मानी जायेगी. लिहाजा यन्दा या ढाल पेश करने वाले से पूछ लिया जाओ के येह किस की तरफ से है अगर किसी और का नाम बताओ तो अब इस का “हां” करना मुईद न होगी अस्ल मालिक से इनायत वगैरा के जरीओ राबिता करे. (जक़ात और इत्रा देने वाले से कुल्ली इप्तियारात लेने की इज्जत नहीं क्यूंके येह “शर-ई हीले” के जरीओ इस्ति’माल किये जाते हैं)

इँजाने मदीना, ग्री कोनिया बगीये के पास, मिरजापूर, अहमदआबाद गुजरात, इन्डिया.

www.dawateislami.net

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ જો મુઝ પર એક દુરુદ શરીફ પઢતા હૈ અલ્લાહ ઓસ કે લિયે એક કીરાત અજર લિખતા હૈ ઓર કીરાત ઉદુદ પહાડ જિતના હૈ. (જિહાદ)

મ-દની ઈલ્તિજા : કુરબાની કે તફ્સીલી મસાઈલ બહારે શરીઅત જિલ્દ 3 સફહા 337 તા 353 મેં મુલા-હઝા ફરમા લીજિયે.

રક્સે બિસ્મિલ કી બહારેં તો મિના મેં દેખીં
દિલો ખૂના બ ફશાં કા ભી તડપના દેખો

(હદાઈકે બખ્શિશ શરીફ)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

الصَّمْتُ أَرْفَعُ الْعِبَادَةَ

ખામોશી આ'લાહ-ર-કૈ કી ઉબાદત હૈ.

(الْجَامِعُ الصَّغِيرُ لِلشَّيْطَانِي حاديث ٥١٠٨)

તાલિબે ગમે મદીના વ
બકીઅ વ મઘિરત વ
બે હિસાબ જન્નતુલ
ફિરદૌસ મેં આકા કા
પડોસ



21 ઝી કા'દતિલ હરામ 1432 સિ હિ.
18 અકતૂબર 2011 સિ. ઈ.

येह रिसाला पढ कर दूसरे को दे दीजिये

શાદી ગમી કી તકરીબાત, ઈજતિમાઆત, આ'રાસ ઓર જુલૂસે મીલાદ વગૈરા મેં મક-ત-બતુલ મદીના કે શાએઅ કદા' રસાઈલ ઓર મ-દની ફૂલોં પર મુશ્તમિલ પેશ્લેટ તક્સીમ કર કે સવાબ કમાઈયે, ગાહકોં કો બ નિચ્ચતે સવાબ તોહફે મેં દેને કે લિયે અપની દુકાનોં પર ભી રસાઈલ રખને કા મા'મૂલ બનાઈયે, અખ્બાર ફરોશોં યા બચ્ચોં કે ઝરીએ અપને મહલ્લે કે ઘર ઘર મેં માહાના કમ અઝ કમ એક અદદ સુન્નતોં ભરા રિસાલા યા મ-દની ફૂલોં કા પેશ્લેટ પહોંચા કર નેકી કી દા'વત કી ધૂમેં મચાઈયે ઓર ખૂબ સવાબ કમાઈયે.

ફેહરિસ્ત

ઉન્વાન	પૃષ્ઠાંક પાનાંક	ઉન્વાન	પૃષ્ઠાંક પાનાંક
દુરુદ શરીફ કી ફઝીલત	1	મરને કે બા'દ મઝલૂમ જાનવર મુસલ્લત હો સકતા હૈ	16
અબ્લક ઘોડે સુવાર	1	કુરબાની કે વક્ત તમાશા દેખના કેસા ?	17
يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ إِنَّا نَحْنُ الْغَالِبُونَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ	2	ઝબીહા કો આરામ પહોંચાઈયે	18
કયા કર્ઝ લે કર ભી કુરબાની કરની હોગી ?	3	જાનવર કો ભૂકા પ્યાસા ઝબ્હ ન કરેં	19
પુલ સિરાત કી સુવારી	3	બકરી છુરી કી તરફ દેખ રહી થી	20
કુરબાની કરને વાલે બાલ નાખુન ન કાટેં	4	ઝબ્હ કે લિયે ટાંગ મત ઘસીટો !	20
ગરીબોં કી કુરબાની	5	મખ્મી પર રહ્મ કરના બાઈસે મગ્ફિરત હો ગયા	21
મુસ્તહબ કામ કે લિયે ગુનાહ કી ઈજાઝત નહીં	5	મખ્મી કો મારના કેસા ?	21
કુરબાની વાજિબ હોને કે લિયે કિતના માલ હોના ચાહિયે	6	કુરબાની મેં અકીકે કા હિસ્સા	22
વક્ત કે અન્દર શરાઈત પાએ ગએ તો હી કુરબાની વાજિબ હોગી	8	ઈજતિમાઈ કુરબાની કા ગોશત વઝૂન કર કે તક્સીમ કરના હોગા	22
કુરબાની કે 12 મ-દની ફૂલ	8	અન્દાઝે સે ગોશત તક્સીમ કરને કે દો હીલે	22
ઐબદાર જાનવરોં કી તફસીલ જિન કી કુરબાની નહીં હોતી	10	કુરબાની કે ગોશત કે તીન હિસ્સે	23
ઝબ્હ મેં કિતની રગેં કટની ચાહિએ ?	12	વસિય્યત કી કુરબાની કે ગોશત કા મસ્બલા	23
કુરબાની કા તરીકા	13	છ સુવાલાત વ જવાબાત	24
કુરબાની કા જાનવર ઝબ્હ કરને સે પહલે યેહ દુઆ પઢી જાએ	14	ચન્દે કી રકમ સે ઈજતિમાઈ કુરબાની કે લિયે ગાએં પરીદના	24
મ-દની ઈક્તિજા	14	ગુ-રબા કો ખાલેં લેને દીજિયે	24
બકરી જન્તી જાનવર હૈ	15	ખાલોં કે લિયે બે જા ઝિદ મત કીજિયે	25
જાનવરોં પર રહ્મ કી અપીલ	15	સુન્ની મદારિસ કી ખાલેં મત કાટિયે	26

उत्तरान	पुस्तक क्रमांक	उत्तरान	पुस्तक क्रमांक
सुन्नी मद्रसे को ખાલ ખુદ દે આઈયે	27	ગુફુદ	40
अपनी कुरआनी की ખાલ બેચ દી તો ?	28	કપૂરા	40
કસ્સાબ કે લિયે 20 મ-દની ફૂલ	29	ઓઝડી	41
ગોશત કે 22 અજઝા જો નહીં ખાએ જાતે	37	કુરઆની કી ખાલે જમ્અ કરને વાલે કે લિયે 22 નિયતે ઓર એહતિયાતે	41
પૂન	38	એક અહમ શર-ઈ મસ્અલા	44
હરામ મગ્ન	39	મ-દની ઈલ્તિજા	46
પહે	39	માખઝ વ મરાજેઅ	48

માخذ ומراجع

મટબુએ	કતાબ	મટબુએ	કતાબ
فیاء القرآن تبلیغی کیشنز مرکز الادبیاء لاہور	مراجعة المناجیح	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	قران پاک
کوئٹہ	اشیخ المدعات	دارالکتب العلمیہ بیروت	صحیح بخاری
دارالمعرفۃ بیروت	الترجمان عن الاعتراف الکبائر	دارابن حزم بیروت	صحیح مسلم
دارالکتب العلمیہ بیروت	مکاشفۃ القلوب	دارالفکر بیروت	سنن ترمذی
دارالکتب العلمیہ بیروت	لطائف المینن والآخلاق	دارالمعرفۃ بیروت	سنن ابن ماجہ
دارالفکر بیروت	درۃ الناصحین	دارالفکر بیروت	مسند امام احمد
دارالکتب العلمیہ بیروت	حیاة الخیوان	دارالکتب العلمیہ بیروت	سنن الکبریٰ
داراحیاء التراث العربی بیروت	ہدایہ	دارالمعرفۃ بیروت	المستدرک
دارالمعرفۃ بیروت	درمختار و در المختار	داراحیاء التراث العربی بیروت	معجم کبیر
دارالفکر بیروت	عائلیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت	شعب الایمان
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دارالکتب العلمیہ بیروت	الفردوس بماثور الخطاب
رضا فاؤنڈیشن مرکز الادبیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ	دارالکتب العلمیہ بیروت	البحر مع الصغیر
مکتبۃ رضویہ باب المدینہ کراچی	فتاویٰ امجدیہ	دارالفکر بیروت	مرقاۃ المفاتیح